

पद ३८ (हिंदी)

(राग: झिंजोटी - ताल: त्रिताल)

मन लागा मेंरा अवधूता से ॥ध्रु. ॥ निरंजन निर्गुण निर्वैरी । निराकार
दीनानाथा से ॥१ ॥ बहुरंगी जोगी संगत्यागी । ज्ञान अखिल पद
दाता से ॥२ ॥ माणिक के मन लग गयो चरणन । अनुसूयाजी के
पूता से ॥३ ॥